लोक सभा वाद-विवाद

का

संक्षिप्त अनूदित संस्करण

SUMMARISED TRANSLATED VERSION
OF
LOK SABHA DEBATES

[तेरहवां सत्र
Thirteenth Session]

5th Lok Sabha

[खंड 51 में अंक 31 से 40 तक हैं
Vol. LI Contains Nos. 31 to 40]

लोक-सभा सचिवालय

नई दिल्ली

LOK SABHA SECRETARIAT
NEW DELHI

मूल्य : दो रुपये

Price : Two Rupees

यह लोक सभा वाद-विवाद का संक्षिप्त अनूदित संस्करण है और इसमें अंग्रेजी/हिन्दी में दिये गये भाषणों आदि का हिन्दी/अंग्रेजी में अनुवाद है।

This is translated version in a summary form of Lok Sabha Debates and contains Hindi/English translation of speeches etc. in English/Hindi]

विषय सूची/CONTENTS

अंक 35, गुरुवार, 17 अप्रैल, 1975/27 चैत्र, 1897 (शक)

No. 35, Thursday, April 17, 1975/Chaitra 27, 1897 (Saka)

विषय	SUBJECT	पृष्ठ PAG
निधन संबंधी उल्लेख	OBITUARY REFERENCE	1—3
डा० एस० राधाकृष्णन और श्री खंडूभाई के० देसाई का निधन ।	Death of Dr. S. Radhakrishnan and Shri Khandubhai K. Desai.	

लोक सभा

LOK SABHA

गुरुवार, 17 अप्रैल, 1975/27 चैत्र, 1897 (शक)
Thursday, April 17, 1975/Chaitra 27, 1897 (Saka)

लोक सभा ग्यारह बजे समवेत हुई
The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए
MR. SPEAKER *in the Chair*]

निधन सम्बन्धी उल्लेख
OBITUARY REFERENCE

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यो, मुझे अत्यन्त खेद के साथ भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० एस० राधाकृष्णन् के दुःखद निधन की सूचना देनी है जिनका स्वर्गवास 86 वर्ष की अवस्था में आज सुबह मद्रास में हो गया।

मातृभूमि के मेधावी सुपुत्र, डा० राधाकृष्णन् एक दार्शनिक-राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने न केवल अपने लिए वरन समस्त देश के लिए कीर्ति अर्जित की और अपने पद को गरिमामय एवं महिमापूर्ण बनाया। प्रेजीडेंसी कालेज, मद्रास, राजमुन्द्री में दर्शन के प्रोफेसर के रूप में अपना जीवन प्रारम्भ करते हुए डा० राधाकृष्णन् ने शिक्षा, कूटनीति तथा प्रशासनिक क्षेत्रों में अनेक ऊंचे पदों पर कार्य किया। छात्रावस्था से ही उनकी कुशाग्र बुद्धि का परिचय इस बात से मिलता है कि उन्होंने एम० ए० में शोध का विषय 'वेदान्त का नीति शास्त्र तथा इसकी तात्विक पूर्वधारणा' लिया। उनकी प्रथम दार्शनिक कृति 'फिलासफी आफ डा० रवीन्द्र नाथ टैगोर' तथा 'रेन आफ रिलीजन इन कन्टेम्पोरेरी फिलासफी' से उन्हें न केवल इस देश में अपितु अनेक विदेशी विश्वविद्यालयों में बड़ी ख्याति मिली। उन्हें हार्वर्ड विश्व-विद्यालय के इन्टरनेशनल कांग्रेस आफ फिलासफी में आमन्त्रित किया गया और बाद में उन्होंने शिकागो विश्वविद्यालय में हस्कल भाषण माला में अपना भाषण दिया। तत्पश्चात् उन्हें मानचेस्टर कालेज, आक्सफोर्ड में तुलनात्मक धर्मों के अध्यक्ष पद को ग्रहण करने के लिए कहा गया। हिन्दू धर्म तथा भगवद्गीता पर उनके गम्भीर भाष्य उनके प्रगाढ़ पाण्डित्य एवं उत्कृष्ट दार्शनिक उपलब्धियों के उदाहरण हैं। वह एक महान् वक्ता थे और अपने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते थे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका-चीन, अमरीका और अन्य अनेक

देशों की यात्रा करते हुए वहां अनेक भाषण दिए, श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया तथा दर्शन-छात्रों का मार्ग-दर्शन किया। तत्पश्चात् उन्हें जेनेवा में 'लीग आफ नेशन्स कमेटी फार इन्टलेक्चूअल कोआपरेशन' के लिए नामांकित किया गया। वर्ष 1946 में यूनेस्को के पहले सम्मेलन में उन्होंने भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया तथा वर्ष 1948 में उन्हें इण्डियन युनिवर्सिटीज़ कमीशन का चेयरमैन नियुक्त किया गया।

शिक्षा के क्षेत्र में इन्होंने कई ऊंचे पदों पर कार्य किया। वर्ष 1931–36 के दौरान वह आंध्रप्रदेश विश्वविद्यालय तथा वर्ष 1939–48 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे। वर्ष 1946–49 में वह भारतीय संविधान सभा के सदस्य रहे। वर्ष 1949 में उनको सोवियत संघ के लिए भारतीय राजदूत नियुक्त किया गया तथा वह इस पद पर वर्ष 1952 तक रहे। अपने कार्य-काल में उन्हें दो बार मार्शल स्टालिन से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ—एक तो तब जब उन्होंने अपने परिचय-पत्र पेश किए और दूसरा तब जब उन्होंने पद-त्याग किया। वर्ष 1952 में वह भारत के उप-राष्ट्रपति चुने गए तथा वर्ष 1957 में इसी पद के लिए पुनः चुने गए। राज्यसभा के अध्यक्ष पद पर रहते हुए उन्होंने संसदविद् के रूप में अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा प्रदर्शित की एवं उच्च परम्पराओं की नींव डाली। इसके बाद वह वर्ष 1962 में भारत के राष्ट्रपति बने तथा वर्ष 1967 तक इस सर्वोच्च पद पर आसीन रहे। अपने कार्य-काल में सरकार एवं राष्ट्र को उनका परिपक्व मार्गदर्शन सर्वविदित है और उनमें हमें वास्तविक रूप में प्लेटो के दार्शनिक-राजनीतिज्ञ की झलक मिलती है। बुद्धिजीवी एवं दार्शनिक के रूप में उनकी प्रसिद्धि इस बात से जाहिर है कि एक अन्य बुद्धि-जीवी बट्रेन्ड रसल ने डा० राधाकृष्णन् के बारे में यह कहा था कि उनका दर्शन सभी के लिए बोधगम्य है और, अन्य दार्शनिक सिद्धान्तों से भिन्न, उनका दर्शन सरल एवं प्रांजल है।

डा० राधाकृष्णन् को अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय उपाधियों से सुशोभित किया गया था। उन्हें वर्ष 1954 में सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान 'भारत रत्न' की उपाधि से एवं वर्ष 1931 में ब्रिटिश 'नाइटहुड' की उपाधि से सुशोभित किया गया। वर्ष 1962 में ब्रिटिश अकादमी के 'फैलो' की उपाधि, वर्ष 1957 में मास्टर आफ विज्डम (मंगोलिया) की उपाधि तथा वर्ष 1959 में गोठे प्लैकेट की उपाधि मिली एवं वर्ष 1975 में धर्म की प्रगति के लिए टेम्पलेटन फांऊडेशन पुरस्कार मिला। कुछ समय से उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था, किन्तु उनका अन्तिम समय तब आया जब किसी को भी इसकी आशंका नहीं थी। उनकी मृत्यु से हुए रिक्त स्थान की पूर्ति कठिन है।

माननीय सदस्यो, मुझे सदन के भूतपूर्व एवं प्रतिष्ठित सहयोगी श्री खंडूभाई के० देसाई के दुःखद निधन की सूचना भी देनी है जिनका स्वर्गवास 77 वर्ष की आयु में आज सुबह अहमदाबाद में हो गया।

वह वर्ष 1946–50 के दौरान संविधान सभा के, वर्ष 1950-52 के दौरान अस्थाई संसद के एवं वर्ष 1952–57 के दौरान पहली लोक सभा के सदस्य रहे। वर्ष 1954–57 के दौरान वह केन्द्रीय श्रम मंत्री रहे और बाद में आंध्रप्रदेश के राज्यपाल रहे। एक मजदूर

नेता होने के नाते वह इण्डियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। संसदविद् के रूप में उनकी बुद्धि एवं वाक्पटुता सर्वविदित है। उनका निःस्वार्थ कार्य और मजदूर संघ व्यवस्था एवं श्रमिक कल्याण के प्रति उनकी निष्ठा उनकी स्मृति में चिरस्थायी श्रद्धांजलि है।

डा० राधाकृष्णन् एवं श्री देसाई की क्षति पर हम शोक व्यक्त करते हैं और मुझे विश्वास है कि शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना संदेश भेजने में सदन मेरे साथ शरीक होगा।

अब सदस्य थोड़ी देर के लिए मौन खड़े रहें।

तत्पश्चात् सदस्यगण कुछ देर मौन खड़े रहे।

The Members then stood in silence for a short while.

अध्यक्ष महोदय : डा० राधाकृष्णन् की पुण्य स्मृति के सम्मान में सभा कल 11 बजे तक के लिए स्थगित होती है।

तत्पश्चात् लोक-सभा शुक्रवार, 18 अप्रैल, 1975/28 चैत्र, 1897 (शक) के ग्यारह बजे म० पू० तक के लिए स्थगित हुई

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the clock on Friday, the April 18th, 1975 / Chaitra 28, 1897 Saka

---